मधुबन ओम् शान्ति अंक 381 अप्रैल 2024

पत्र-पुष्प

"परमात्म प्रत्यक्षता के लिए आपस में संस्कार मिलन की रास करते संगठन को शक्तिशाली बनाओ" (दादी जी 22-03-2024)

परमप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा संस्कार मिलन की रास करने वाले, ब्रह्मा बाप समान उदारचित, कल्याणकारी, रहमदिल निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व बाबा के नूरे रत्न, ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - संगमयुग के यादगार त्योहारों को धूमधाम से मनाते सभी ने बहुत अच्छी बेहद की सेवायें की हैं। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर चारों तरफ शिव भोलानाथ बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए अनेकानेक कार्यक्रम हुए हैं, जिनके समाचार तो मीडिया द्वारा सुनते और देखते रहते हैं। बाबा सदा कहते बच्चे, सेवायें तो ब्राह्मण जीवन का श्वांस हैं, सेवा के बिना यह ब्राह्मण जीवन नहीं। लेकिन सेवा करते स्थिति सदा ऊंचे से ऊंची महान रहे, कभी भी आपस में संस्कारों का टकराव न हो। जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कार सदा निर्मानचित, उदारचित, परोपकार की भावना से सम्पन्न रहमदिल के रहे। ऐसे आप बच्चों के संस्कार उनके समान हों। सदा ध्यान रहे कि हमारी स्थिति स्तुति के आधार पर न हो।

संस्कार मिलाने के लिए जहाँ मालिक बनना है वहाँ बालक नहीं और जहाँ बालक बनना है वहाँ मालिक नहीं। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प, जो भी आज्ञा मिले, डायरेक्शन मिले उस पर चलते चलो। मालिक बन अपनी राय दो फिर बालक बन जाओ तो टकराव से बच जायेंगे। अन्दर में कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कार वा विकर्म का किचड़ा न हो। जब ऐसी सच्चाई और सफाई रखेंगे तब सबके प्रिय बनेंगे। अभी हम सबको प्रभु प्रिय के साथ-साथ दैवी परिवार का भी प्रिय बनना है। सदैव यही कोशिश करनी है कि मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो। संस्कारों को मिलाने के लिए स्वयं को इतने तक मिटाना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये। बाबा कहते बच्चे, एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो तो संस्कार मिलन सहज हो जायेगा और सम्पूर्णता व सफलता समीप आ जायेगी।

बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसा ही लक्ष्य रख सदा एकमत, एकरस स्थिति द्वारा संगठन को एकता के सूत्र में पिरोते हुए परमात्म प्रत्यक्षता के कार्य में तीव्रगति से आगे बढ़ रहे हो ना! समय भी अचानक के कई खेल दिखाता है इसलिए सभी बाबा के बच्चों को अपने हर स्थान को तपस्या कुण्ड बनाना है। सदा योग की अग्नि प्रज्जवलित रहे, संकल्पों पर पूरा कन्ट्रोल हो, हलचल में भी स्थिति सदा अचल अडोल रहे तब योग के गहन अनुभव कर सकेंगे। अब हम सबको संगठित रूप में पूरे विश्व को पवित्र मन्सा द्वारा सुख शान्ति के वायब्रेशन फैलाने की सेवा करते रहना है। मन्सा सेवा के लिए जरूर समय निकालना है।

बाकी यह अव्यक्त मिलन की सुहावनी सीजन बहुत अच्छी रही। देश विदेश से लाखों बाबा के बच्चे मधुबन घर में आये और खूब भरपूर होकर गये। अभी फिर वार्षिक मीटिंग के पश्चात राजयोग शिविर, विंग्स के कार्यक्रम तथा योग भट्ठियां चलती रहेंगी। मधुबन घर तो हर एक को अपनी ओर सदा आकर्षित करता रहता है, सभी को मधुबन में आने का सदा ही इन्तजार रहता है। बाबा ने तपस्या के लिए ऐसा सुन्दर स्थान बनाया है, जो कोई भी यहाँ आते ही रिफ्रेश हो जाता है। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

संस्कार मिलन की रास करो

1) बापदादा समय की समीपता प्रमाण अभी संस्कार मिलन की महारास देखना चाहते हैं, इसके लिए पहले स्वयं को एडजेस्ट कर दूसरों से संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करो। एडजेस्ट करने की शक्ति संस्कारों को मिला देगी।

2) बापदादा से तो मिलन मनाते हो लेकिन बड़े से बड़ा मिलन है आपस में संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी, इसके लिए मधुरता के गुण को धारण करो। कटाक्ष के बोल वा कटु बोल नहीं बोलो।

3) वर्तमान समय स्वयं को शमा पर इतना मिटा देना है जो यह शब्द भी समाप्त हो जाए कि यह मेरे संस्कार हैं, यह मेरी नेचर है। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब आपके अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। जैसे मिलन में हाथ मिलाते हैं, यह मिलन है संस्कार मिलन – अगर सबके संस्कार एक समान हो जाएं तो एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जायेगी।

4) जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, नि:स्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।

5) जैसे होली पर लोग आपस में गले मिलते हैं, ऐसे यहाँ संस्कार मिलन ही मंगल मिलन है। एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तो उनसे मिक्स हो जाते हो, ऐसे एक दो में मिक्स होने के लिए जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव वाले बनो।

6) एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है, अगर कोई निंदा कर देता है तो निधनके बन जाते हैं, अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं। लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

7) संस्कार मिलाने के लिए जहाँ मालिक हो चलना है वहाँ बालक नहीं बनना और जहाँ बालक बनना है वहाँ मालिक नहीं बनना। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प। जो भी आज्ञा मिले, डायरेक्शन मिले उस पर चलना। मालिक बन अपनी राय दो फिर बालक बन जाओ तो टकराव से बच जायेंगे। राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

8) मन में जब कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई चाहिए। अन्दर में कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों वा विकर्मो का किचड़ा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा और जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले वह प्रभु प्रिय होगा, फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। संस्कारों की टक्कर से बच जायेगा।

9) यह देह रूपी वस्त्र किसी भी संस्कार से लटका हुआ न हो। जब सभी पुराने संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जायेगी इसलिए सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे और पुरुषार्थ भी इज़ी होगा।

10) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए विशेष दो बातें ध्यान में रखनी हैं - एक सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी। इसके लिए हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी शीतल हो जायेगा। दूसरा - सन्तुष्ट रहना है और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहें तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई दे और प्रत्यक्षता हो।

11) सदैव यही कोशिश करनी है कि मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हों। यह है ब्राह्मण कुल की रीति। संस्कारों को मिलाने के लिए दिलों का मिलन करना पड़ेगा,

इसके लिए कुछ भुलाना पड़ेगा, कुछ मिटाना और कुछ समाना पड़ेगा। यह मेरे संस्कार हैं, यह शब्द भी मिट जाये। इतने तक मिटना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये।

12) संस्कार मिलन की रास करने के लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो। अगर स्वीकार करना और सत्कार देना, यह दोनों ही बातें आ जाएं तो सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जायेंगी। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण संस्कार वाला बना लेंगे तब समाप्ति होगी।

13) जितना आपस में संस्कारों को समानता में लायेंगे उतना ही समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे और जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

14) जितना एक दो के समीप आते जा रहे हो उतना एक दो को सम्मान देते चलो। जितना सम्मान देंगे उतना सारी विश्व आप अभी का सम्मान करेगी, सम्मान देने से सम्मान मिलेगा और सम्मान देने से संस्कार मिलन भी सहज हो जायेगा।

15) यदि आपको कभी कोई का विचार स्पष्ट नहीं लगता है तो भी ना कभी नहीं करनी चाहिए। शब्द सदैव हाँ जी निकलना चाहिये। समय को देखकर इशारा दे सकते हो, अगर उसी समय ना कहकर कट करेंगे तो संस्कार टकरायेंगे, इसलिए हाँ जी कर धरनी बनाओ, फिर समय देख इशारा दो, यही विधि है संस्कार मिलन की।

16) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वाले। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो। दिलपसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। हर बोल, कर्म और वृत्ति से वह हल्कापन अनुभव हो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें, इसके लिए सहनशक्ति धारण करो। भल कोई किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। कोई का हद का संस्कार प्रभावित न करे।

17) कोई भी माला जब बनाते हैं तो एक दाना दूसरे दाने से मिला हुआ रहता है। वैजयन्ती माला में भी चाहे कोई 108 वां नम्बर हो लेकिन दाना दाने से मिला होता है। तो सभी को यह महसूसता आये कि यह तो माला के समान पिरोये हुए मणके हैं। वैरायटी संस्कार होते भी समीप दिखाई दें।

18) एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना - यह माला के दानों की विशेषता है। लेकिन एक दो के स्नेही तब बनेंगे जब संस्कार और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे, इसके लिए सरलता का गुण धारण करो।

19) सर्विस में सफलता का आधार है नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। नम्रता के गुण से सब नमन करते हैं। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं इसलिए शरीर को निमित्त मात्र समझकर चलो और सर्विस में अपने को निमित्त समझकर चलो तब नम्रता आयेगी। जहाँ नम्रता है वहाँ टकराव नहीं हो सकता। स्वत: संस्कार मिलन हो जायेगा।

20) संस्कार मिलन की रास करने के लिए अपनी नेचर को इज़ी और एक्टिव बनाओ। इजी अर्थात् अपने पुरुषार्थ में, संस्कारों में भारीपन न हो। इज़ी है तो एक्टिव है। अगर खुद इज़ी नहीं बनते हैं तो मुश्किलातों का सामना करना पड़ता है। फिर अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं।

21) बापदादा बच्चों को विश्व महाराजन बनाने की पढ़ाई पढ़ाते हैं। विश्व महाराजन बनने वाले सर्व के स्नेही होंगे। जैसे बाप सर्व के स्नेही और सर्व उनके स्नेही हैं, ऐसे एक-एक के अन्दर से उनके प्रति स्नेह के फूल बरसेंगे। जब स्नेह के फूल यहाँ बरसेंगे तब जड़ चित्रों पर भी फूल बरसेंगे। तो लक्ष्य रखो कि सर्व के स्नेह के पुष्प पात्र बनें। स्नेह मिलेगा सहयोग देने से।

22) मधुरता आने के बाद ही संस्कारों का मिलन होता है। भिन्न-भिन्न संस्कारों के कारण ही एक दो से दूर होते हो लेकिन जब वाणी में मधुरता (मिठास) आ जाती है तो फिर संस्कार मिलन की रास होने लगती है। जब संस्कार मिलन का सम्मेलन हो तब जयजयकार होगी।

23) किसी के स्वभाव अथवा संस्कारों को देख किनारा करना, यह भी घृणा अर्थात् क्रोध का ही अंश है। इसका रॉयल शब्द है - अपनी अवस्था को खराब करें इससे किनारा करना अच्छा है। लेकिन न्यारा बनना और चीज़ है, किनारा करना और चीज़ है। प्यारे बन न्यारे बनते हो, वह राइट है। लेकिन सूक्ष्म घृणा भाव ''यह ऐसा है, यह तो बदलना ही नहीं है।'' ऐसे सदा के लिए उसको सूक्ष्म में श्रापित करते हो। खुद सेफ रहो लेकिन दूसरों को फाइनल सर्टीफिकेट नहीं दो।

24) सदा याद रखो ''मुझे अपने को बदलना है'' स्थान को वा दूसरे को नहीं। इसके लिए सहनशीलता का अवतार बन जाओ। अपने को एडजेस्ट करो। किनारा नहीं करो। कोई बिल्कुल एन्टी है उस पर भी अपनी शुभ भावना का फुल फोर्स से ट्रायल करो, समय भल लगे सफलता अवश्य मिलेगी और आपको विजयी माला का दाना बना देगी।

25) जैसे दूसरों के संस्कारों को साक्षी होकर देखते हो वैसे अपने तमोप्रधान स्टेज के संस्कारों को भी साक्षी होकर देखो और समाप्त करो। अनुभव करो जैसे यह संस्कार स्वाहा हो रहे हैं, ऐसा समझने से ही सदा सफलता को पाते रहेंगे।

26) संस्कार तो भिन्न-भिन्न होते ही हैं और होंगे भी लेकिन संस्कारों को टकराना या किनारा करके स्वयं को सेफ रखना, यह अपने ऊपर है। कुछ भी हो जाता है तो अगर कोई का संस्कार ऐसा है तो दूसरा ताली नहीं बजावे। चाहे वह बदलते हैं या नहीं बदलते हैं लेकिन आप तो बदल सकते हो ना। अगर हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा।

27) किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं। जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे। जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वही लगते हैं।

28) जो भी बात सामने आये तो यह लक्ष्य रखो कि एक सेकेण्ड में बदल जाये। जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय बन जाये। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदत न रहे। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही लक्ष्य रखो कि हमारी चलन से कोई को भी दु:ख न हो।

29) अभी बाप के संस्कार, बाप के गुण, बाप के कर्तव्य की स्पीड और बाप के अव्यक्त निराकारी स्थिति की स्टेज सभी में समानता का मेला मनाओ। जब आप बाप की समानता का मेला मनायेंगे तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आयेंगे। बाप की समानता ही विनाश को समीप लायेगी।

30) जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वालास्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्जवलित करो जिसमें सभी आसरी कलियुगी संस्कार जलकर भस्म हो जायें तब संस्कार मिलन की रास होगी और नया संसार आयेगा।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"निरन्तर योगी बनना है तो बाबा को अपना संसार बना लो, पेपर में घबराने के बजाए उसमें पास हो अनुभव की अथॉरिटी बनो" (29-11-08)

एक बाबा ही मेरा संसार है, इस स्मृति से बुद्धि और सब तरफ से निकल जायेगी। बाबा को याद करना माना बाबा में संसार समा गया। संसार में सम्बन्ध और सम्पत्ति यह दो चीज़ें होती हैं। तो जब बाबा ही मेरा संसार है और संसार के सिवाए और कौन है? सर्व सम्बन्ध बाबा के साथ होने के कारण सर्व प्राप्तियाँ स्वत: हो जाती हैं। अनेकों को याद करना सहज है या एक को? बाबा के सिवाए और कोई है ही नहीं, तो याद सहज हो जाती है।

जब भी कोई सम्पत्ति या सम्बन्ध याद आता है तब ही माया आती है। हम सबका अविनाशी सम्बन्ध और अविनाशी प्राप्तियां एक बाबा से है तो नेचुरल हमारी बुद्धि अविनाशी तरफ जायेगी और निरन्तर योगी बन जायेंगे। बाबा कहता है जब भी कोई माया का पेपर आता है, व्यर्थ संकल्प के रूप में या किसी भी आकर्षण के रूप में... तो यही याद करो कि यह पेपर मेरे सामने आया है, मुझे पास होना है। बातों को नहीं सोचो लेकिन पेपर के रूप में बात को देखो। जो पढ़ाई में होशियार होते हैं वो

कहते हैं पेपर आये तो मैं पास होके आगे जाऊं। और जो पढ़ाई में थोड़ा कमजोर होंगे वो सोचेंगे पता नहीं क्या पेपर निकलेगा। पेपर देखकर सोचेंगे यह पेपर किसने निकाला? उसी उलझन में चले जायेंगे। बाबा भी कहता कि पेपर माना क्लास आगे बढ़ना।

हम गॉडली स्टूडेन्ट्स के सामने पेपर आने से हम अनुभव की अथॉरिटी में आगे बढ़ते हैं क्योंकि एक बारी के अनुभव से हमेशा के लिए अनेक बातें हल हो जायेंगी। अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। तो जब पेपर आता है तब समझो कि बाबा मुझे आगे बढ़ने के लिए यह अनुभव की अथॉरिटी दिला रहा है, इससे खुशी होगी कि हम आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे नहीं यह क्यों हुआ? यह होना नहीं चाहिए, यह होना चाहिए इस तरह के वेस्ट थॉट्स खत्म हो जायेंगे। तो इज़ी है ना! नो प्रॉबलम! तो भी घबराने वाली बातें हैं, वह सब यहाँ छोड़के जाओ। जो चीज़ छोड़ दी जाती है, उसे फिर यूज़ नहीं किया जाता है। अगर दूसरे की दी हुई चीज़ हम यूज़ करते हैं तो यह भी अमानत में ख्यानत है।

ड्रामा में ऐसा राज़ रखा हुआ है कि पुरुषार्थ का एक जन्म और प्राप्ति का 21 जन्म, वो भी फुल जन्म यानि बीच में ही किसी भी कारण से शरीर नहीं छोडेंगे। तो समय बहुत कम है इसलिए अभी यहाँ जो बहुत समय से पुरुषार्थ करेंगे वो वहाँ भी फुल जन्म लेंगे। तो अभी हर घड़ी अटेन्शन प्लीज़, हर श्वाँस ध्यान देना पड़ेगा क्योंकि फर्स्ट जन्म में आना है। अटेन्शन को भी अण्डरलाइन करो, इसके लिए एक बाबा में ही सब संसार की अनुभूति को बढ़ाते चलो। सब कुछ एक बाबा से ही प्राप्ति करते रहो। फुल वर्सा लेना है तो फुल पास हो जाओ। यह भी बाबा का एक वरदान है कि मैं डबल तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप की हूँ, इस याद से भी बदल जायेंगे।

याद और सेवा दोनों में नम्बर लेके पास होना है। मन्सा से दु:खी आत्माओं को सुखी बनाने की सेवा करो, सकाश द्वारा वायब्रेशन दो। अपने नयनों में रूहानियत हो, मुख सदा मुस्कराता रहे, वाणी द्वारा सेवा करने का चांस मिले न मिले, पर चाल-चलन से सेवा करो। किसी भी प्रकार से मन को सर्विस में बिजी रखो तो इससे माया भाग जायेगी और आप पास हो जायेंगे। फिर तो बाबा की याद और सेवा यही दो काम रह जाते हैं। ओमशान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"बापदादा से जो खजाने मिले हैं बुद्धि उसी में रमण करती रहे तो जीवन में रमणीकता आ जायेगी" (2006)

बाप जानी जाननहार है, जहाँ जरूरत है, अपने आप देता है। अगर हमारे में कोई कमी है तो बाबा का नाम बाला नहीं कर सकेंगे। मेरा नाम बाला हो, मुझे नाम चाहिए ही नहीं। पर मेरे बाबा का नाम हो, बाबा कितना कल्याणकारी है, किसी को अनुभव हो जाये, यह उसकी सन्तान है। आज की दुनिया में कोई भी निष्कामी, निरहंकारी नहीं हैं। अगर हमारे में ये दो बातें नहीं आयी तो सम्पन्नता बहुत दूर हो जायेगी। जो बाबा ने मुझ आत्मा प्रति कहा है वो मैं भूल जाऊं, बाकी बातें याद करूँ तो मेरे जैसा मूर्ख कोई नहीं। कोई पराई और पुरानी बातें याद करना माना सब कुछ गंवा देना। सम्बन्ध में भी सहयोग नहीं मिलेगा, फिर सारा बोझ सिर पर आयेगा।

अपनी बुद्धि चलाने के बजाए, उससे योग क्यों न लगाऊं। शुरू से लेकर अगर कोई हमारे में कमजोरी रही तो कमी भी रहेगी। ज्ञान का खजाना, समय का खजाना, गुणों का खजाना, शक्तियों का खजाना जो हमें मिला है। उस खजाने को सम्भालना और बढ़ाना है। उसी में बुद्धि रमण करती रहेगी तो जीवन में रमणीकता आयेगी।

मेरे जैसे को हंसाना मुश्किल था, मैं समझती थी ये भी टाइम वेस्ट है। पर यह अक्ल नहीं था कि रुहानियत में भी रहूँ और रमणीकता भी रहे। रुहानियत अपने स्वमान में रखती है, रमणीकता मीठा स्वरूप नम्रता वाला औरों को समीप ले आता है इसलिए अपने पास इतना खजाना हो जो कोई भी सामने आये, अच्छी रूहरिहान तो करे ना। अरे मुस्कराऊं तो सही। अन्दर से अपने आपको बाबा समान बनाना है। हम बाप समान बनते जायें तो और समानता में समीप आते जायेंगे। संग में समान बनते जायेंगे। सच्चाई, स्नेह, समीपता बाबा के नजदीक ले आती

है। जो हमारे संग साथ है, उनको भी ऐसे फीलिंग हो कि हम बाबा के साथ रहते हैं। केवल मैं नहीं रहती हूँ, हम सब बाबा के साथ रहते हैं।

सम्पन्न बनने में मेरी कमी या दूसरे की कमी बीच में इन्टरफियर न करें। अगर मेरी कमी हुई तो दूसरों को भी तकलीफ होगी। या दूसरों के कमी की मुझे तकलीफ होती है तो वो मेरी कमजोरी हो गयी। उसमें सम्पन्नता तो और दूर हो जायेगी। अपने को सम्भालने के लिए बाबा एकदम सामने आ जाता है, तुम क्या कर रही हो। कभी हम बाबा को नहीं कह सकते कि बाबा यह बिगड़ गयी है, अरे तुम क्या कर रही थी! यज्ञ बाबा का सो हमारा है, इसने किया, नहीं कह सकते हैं। तुम क्या कर रही थी?

बाबा हमको क्या बनाने चाहता है, वो करके दिखाया है। कितना भगवान को प्यार है, मैं तो यही देखती रहती थी। इतना प्यार मुझ आत्मा में है। अगर मेरे में प्यार नहीं तो मैं सूखी काठी हूँ, और सूखी काठी आपस में रगड़ेगी तो आग लग जायेगी। फिर बुझाये कौन! तो प्यार का सागर मेरा बाबा, ज्ञान देता है और कहता है कि ज्ञानी तू आत्मा मुझे प्रिय लगती है। यह भी समझाया है कि ये सतोगुण है, ये आसुरी गुण है। छोटी-छोटी बातों में भी बाबा ने इतना ध्यान खिचवाया है, हम उन बातों में ध्यान न रखें और बातों में ध्यान रहे तो बाबा कहेगा कि यह मोटी बुद्धि है।

बाबा के काम का मुझे बनना है, बाबा के साथ प्यार है ना! दिल दिलवाले को दी है, दिलवाले के साथ तपस्या कर रहे हैं। वह कहता है तुम मेरी दिलरुबा हो, अगर वह कहे तुम मेरे काम की नहीं हो, तो संगम पर जीना किस काम का। जो मुझे अच्छा लगता है वो मैं करूँ, तो बाबा कहेगा तुम मेरे काम की नहीं हो।

सर्वशक्तिमान बाबा की शक्ति काम करती है, सिर्फ हम लेते जायें। अपनी कमजोरी कमी में अगर वो शक्ति नहीं खींच सकेंगे तो क्या हाल होगा! संगमयुग की सुनहरी घड़ियाँ हैं, भगवान स्वयं पढ़ाकर लायक बना रहा है। तो जो कमी कमजोरी है उसे खत्म करना है, दूसरों की कमी-कमजोरी नहीं देखना है। दूसरों की कमी मुझे कमजोर करेगी, पर मेरी कमी कमजोरी को बाबा खत्म कर देगा। दूसरे टेस्ट लेंगे, पर बाबा पास होने की शक्ति देता है। बच्ची मैं बैठा हूँ ना। हम सब सच की नैया में बैठे हैं, बाबा ले जा रहा है। दुनिया देख रही है ये सब जा रहे हैं कहीं। हमको देख वो भी साथ में बैठ जायेंगे। ओ.के.

प्रश्नः- दादी जी सम्पन्नता की निशानियाँ क्या हैं, जो हम सबको अपने ध्यान पर रखनी हैं?

उत्तरः- सम्पन्नता की निशानियां - सेवा में पहले स्वयं में कोई कमी कमजोरी न हो। सम्बन्ध में ईश्वरीय स्नेह का सहयोग हो। मेरे को सहयोग कोई देवे, यह बात नहीं। परन्तु मेरा फर्ज है, मेरा परिवार है, मेरे रग-रग में परिवार के लिए इतना प्यार हो, तो सहयोग देना कोई बड़ी बात नहीं है। मैं समझती हूँ जो भी कार्य है, जहाँ भी है, बाबा का है, बच्चे बाबा के हैं, सच्चाई और स्नेह काम करता है। गोवर्धन वाली कहानी, सबकी अंगुली से काम हो गया। बलिहारी संगठन की है, अगर इसमें जरा भी कमी है, तो सम्पन्न नहीं बन सकते। परिवार में हरेक का आपस में प्यार हो, एक दो के स्नेह से ही हरेक कार्य में सम्पन्नता आयेगी। हमारी इनर्जी, टाइम और संकल्प सब सफल होना चाहिए, कुछ भी निष्फल न हो। जो भी धन से, तन से या सम्बन्ध से सेवा कर रहे हैं, उनका भी सफल होना चाहिए। निष्फल न हो। अन्दर सूक्ष्म यही रहता है कि हर एक का सब सफल हो। जो डालने वाले हैं वो बहुत भावना से डालते हैं, जो खर्च करने वाले हैं उनको भावना का पता नहीं होता है। जिन्होंने भण्डारी में डाला, उन्होंने तो अच्छी तरह से सफल किया। कोई भी कार्य है, एक तन से करने वाले हैं, एक धन से करने वाले हैं, एक मन से करने वाले हैं, तीनों सफल हो। निष्फल एक कौड़ी न जाये। एक दाना भी नाली में न जाये। जैसे बाबा ने एकॉनामी सिखाई है, उसमें भी हम सम्पन्न बनें, मिसाल बनें। सेवा में सम्बन्ध में एकनामी, एकानामी।

बाबा ने कैसे हमारे दिलों को जीता है, यह गुण हमारे में भी आ जाये तो सम्पन्नता आ जायेगी। हॉबी है जो बाबा ने किया है वही करें, उससे यज्ञ चल रहा है। कहाँ से कहाँ, बाबा के चरित्रों से, बाबा की तपस्या से सब फल खा रहे हैं। तपस्या बाबा ने की, त्याग बाबा का है, पर हम भी तो कुछ त्याग-तपस्या करें तब तो सम्पन्नता आयेगी।

रीयल्टी क्या है, वो मेरे अन्दर आ जाये तो सम्पन्नता मेरे गले का हार बनना सहज है। अगर हमारी एकता में कमी होगी, बिल्डिग में फूट पड़ी तो खतरा है। हम यज्ञ के पिल्लर्स हैं, पिलर के आधार पर बिल्डिग खड़ी होती है। पिलर्स का भी

आपस में कनेक्शन रहता है। पिलर दिखावे वाले भी न हो।

बाबा हमको 16 कला सम्पूर्ण बनाता है। हम सब मिलकर सम्पूर्ण बनेंगे। इसमें एक तो खुद बाबा से रुहरिहान करो। अभी तो रुहरिहान का टाइम भी पूरा हो गया है। वानप्रस्थ में बातें कम होती हैं, पर रिस्पेक्ट बहुत होता है। बाबा ने भी कैसे हमारी पालना करके, कितना लायक बनाया है। हम आपस में एक दो को आगे रखते हैं इसलिए दुनिया भी हमको बहुत रिस्पेक्ट से देख रही है। बाबा ने हम बच्चों को इशारे बड़े प्यार से दिये हैं, कान भी पकड़े हैं तो भी प्यार से। आप एक दो को रिस्पेक्ट देना, स्वमान में रहना। कोई भी छोटी-मोटी बात में अपनी सीट से उतर नहीं जाना। बाबा ने बिठाया है, उसमें बहुत फायदा है। यह भट्ठी नहीं पर संगठन की शक्ति क्या होती है, यह संगठन ही ब्राह्मण जीवन की शोभा है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"पॉजिटिव सोचने का अभ्यास हो तो संकल्प शुद्ध और एकाग्र होते जायेंगे"

(6-8-99)

1) यह मौन-भट्ठी है ही विशेष मन का मौन करके अपना मनोबल बढ़ाने के लिए, इसके लिए हरेक को गहराई से अपने आपमें चेक करना है कि हमारे मन में कहाँ तक शुद्ध संकल्प चलते हैं? कहाँ तक हम मन का मालिक राजा बन, मन वजीर को बाकायदे शुद्ध संकल्पों में, मनन-चिंतन में रखते हैं? या मैं-मैं के देह-अभिमान में व्यर्थ संकल्प चलते हैं? स्व के बदले पर को (दूसरे को) देखते-सोचते, संकल्प करते या ज्ञान सागर बाप के ज्ञान के खज़ाने का मनन करते हैं? मन के संकल्प सर्व प्राप्तियों में मगन रहते हैं? सर्व प्राप्तियों के खज़ानों को पाकर अपार खुशियों में रहते हैं?

2) मन के संकल्प पॉजिटिव चलते या निगेटिव चलते? तो विशेष यह भट्ठी है खास इसी बात की चेकिंग करने की। हर प्रकार के निगेटिव थॉटस् को परिवर्तन कर पॉजिटिव सोचो। जितना-जितना पॉजिटिव सोचेंगे उतना मन की शुद्धि होती जायेगी, एकाग्रता बढ़ती जायेगी। पॉजिटिव में भी स्व का चिंतन विशेष करना है। पर को देखने के बदली स्व को देखो। यह कभी नहीं सोचो कि मैं सेवाधारी हूँ, परन्तु मैं ईश्वरीय सेवाधारी हूँ, तो हमारा हर संकल्प, हर बोल, हर कदम सेवा में है या ईश्वरीय सेवा में है? यदि मैं सेवा में हूँ तो भी कहीं देह-अभिमान या मैं-पन आ जाता है। लेकिन मैं हूँ ही ईश्वरीय सेवा पर तो मेरा जो भी खाता है वह बाबा की दरबार में जमा है। तो हर एक अपना ईश्वरीय खाता चेक करो।

3) हम सभी का लक्ष्य है कि हमें बाप को प्रत्यक्ष करना है। तो बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए हमें स्वयं में क्या धारणा करनी है? कई बार बाबा ने मुरली में कहा है तुम्हारा संकल्प, बोल, तुम्हारा चेहरा ही बाप का साक्षात्कार करायेगा। यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी बाबा ने हम सबको दी है। तो खुद को देखो कि मैं बाप समान सम्पन्न बना हूँ? बाप समान सम्पन्न बनना माना ही सर्व विघ्नों से ऊपर निर्विघ्न अवस्था बनाना। सम्पन्न बनने का अर्थ है कि सर्व कमियों-कमजोरियों को समाप्त करना। जैसे पढ़ाई में परीक्षा के दिन होते तो होशियार स्टूडेन्ट का लक्ष्य होता कि मुझे फर्स्ट डिवीजन में पास होना है। पास विद ऑनर बनना है। जब हम पास विद ऑनर्स हों तब तो धर्मराज की सजाओं से मुक्त हों। धर्मराज बाबा हमारा स्वागत करे। बाबा हमें अपनी भुजाओं में वेलकम करे। बाबा कहे ओ मेरे समान बच्चे! आओ। बाबा के समान की हमें मार्क्स मिलें, यह है इस भट्ठी का पुरुषार्थ।

4) भट्ठी में कमजोरी का चिंतन नहीं करो। यह यह कमजोरी है, उसे सोचकर एक बार बुद्धि से निकाल दो। चाहे उसे लिखकर निकालो, चाहे बुद्धि में दृढ़ संकल्प करके निकालो लेकिन यह चिंतन करो कि हमें ऐसी ऊंची स्थिति बनानी है। अपने आपको इतनी ऊंची दृष्टि से देखो कि बरोबर हम ऊपर में बाबा के साथ फरिश्तों की दुनिया में उड़ रहे हैं। नीचे में आकर, व्यक्तियों को देख व्यक्तित्व में अपना समय, शक्ति खर्च कर नहीं करो। यह बहुत बड़ी सूक्ष्म स्थिति बनाने की चैलेंज बाबा ने हमें दी है। कोई भी बात व्यक्त में आकर करेंगे तो जैसे पत्थर तोडेंगे लेकिन

ऊपर से उड़ जाओ तो सभी बातें सहज ही क्रॉस हो जायेंगी माना निवारण हो जायेंगी। तो जितना भी टाइम साइलेन्स में बैठो उतना समय गहराई से अनुभव करो कि हम इस देह से परे उड गये हैं। उड़ना माना विदेही बन फरिश्तों की दुनिया में पहुँच जाना। जितना लाइट बन लाइट की दुनिया में, फरिश्ते स्थिति में रहने का अभ्यास करेंगे उतना आटोमेटिक मैं-पन निकल जायेगा। और जितना यह अभ्यास करेंगे उतना जो भी कोई कमजोरी होगी, अपवित्रता के संस्कार आदि जो भी कुछ है वह सब खत्म हो जायेंगे।

5) हर एक को यही शुभ संकल्प करना है कि मुझे बाबा के समान सम्पन्न फरिश्ता बनना है। दूसरा हमें इस विश्व की स्टेज पर अपने चलन-चेहरे, संकल्प, बोल से बाबा को प्रत्यक्ष करना है। हमारे वायब्रेशन ऐसे हों जो आगे वाले कहें कि आप धन्य हैं। आप लोगों को भगवान ने ही पढ़ाया है और पढ़ा भी रहा है। यह संस्था देहधारियों की नहीं है, यह संस्था गुरू-चेलों की नहीं है परन्तु सभी ब्रह्माकुमार/ब्रह्माकुमारियाँ परमात्मा से पढ़ाई पढ़के परमात्म प्यार में लवलीन होने वाले हैं।

6) हमें यह बहुत नशा है कि हम इस संगम पर कितने लक्की हैं, कितने महान भाग्यवान हैं जो वरदाता बाप ने हमें सर्व वरदानों से भरपूर किया है। लोग कृपा मांगते, हमें तो पल-पल, कदम-कदम पर बाबा वरदानों से भरपूर कर रहा है। तो क्या यह दिल में नहीं आता कि हम ऐसा भरपूर बन, परम आनन्द का अनुभव करें। हम प्रभु को अर्पण हैं। कोई पूछे तो हम छाती पर हाथ रखकर कहते हैं कि हमने परमात्मा को पाया है। हमें अटल निश्चय है या हमारे को कोई हिलावे तो हिल जाने वाले हैं? हम पाण्डव हैं, महावीर हैं तो माया को अपने चरणों में झुकाओ तब तो पाण्डव नाम है।

7) माया की शक्ति रावण का राज्य अब पूरा हुआ। अब तुम जाओ, विदाई तुम्हारी। तुम्हें अन्त में मुँह झुका के ही जाना है। अभी तुम्हें जितना सामना करना है, कर ले, मैं तुम्हें पांव में झुकाने वाला हूँ। ऐसी नज़रे तेज हो, इन नयनों में बाबा की इतनी शक्ति भरकर रखो जो मज़ाल है यह नयन कहाँ नीचें देखें। कोई कभी कहता जरा दृष्टि चंचल होती है, तो हम कहती हूँ याद करो भगवानुवाच - हे मेरे नज़रों से निहाल होने वाले बच्चे। तो बोलो, हे पाण्डव इतनी शक्ति से भरपूर हो? हम निहाल हो गये। बाबा की नज़रों में हम हैं, हमारी नज़रों में तुम हो। चाहे कहाँ भी रहें, किधर भी रहें, कुछ भी मिले, कुछ भी खायें। ऐसी अपनी निहाल स्थिति को इस भट्टी में पक्का करके जाना है।

8) बाबा कहते हैं तुम मौलाई मस्ती में रहो, हम हैं योगी, हमें कौन पहचानें! ऐसी मस्ती अपने में जमा करके जाओ। इस बात को अच्छी तरह से समझो, सोचो। ऐसी अपनी मस्ती का अनुभव करके और पक्का चार्ट बनाके जाओ। हम हैं परमात्म तख्त पर बैठे हुए रत्न। प्रभु के दिलतख्त के रत्न हैं, हम कोई तख्ते वाले नहीं हैं। खुद से पूछो कि सचमुच मुझे यह नशा है? हम दिलतख्त के मालिक हैं, हम बाबा के दिलतख्त पर बैठे हैं। मेरे दिलतख्त में बाबा, बाबा के दिलतख्त में हम बच्चे हैं इससे बड़ा वरदान हमें और क्या मिलेगा? ऐसा इतना नशा चढता है? इतनी अन्दर से खुशी और अतीन्द्रिय सुख की मस्ती रहती है? ऐसे परमात्म प्यार में लवलीन रहते हैं? यह नशा अमृतवेले योग में सबको निरन्तर चढाते रहना चाहिए।

9) इस भट्ठी में निगेटिव को पूरा स्वाहा करके जाओ। जिसको कहा जाता है मर जाओ, मिट जाओ ऐसी स्थिति बनाके जाना है। बाबा कहते हैं तुम्हें बेहद का वैराग्य चाहिए। हमारे लिए पुरानी दुनिया मर गई है तो और हमें क्या चाहिए? क्योंकि बाबा ने तो हमको बेहद का बादशाह बनाया, बाकी हमें क्या चाहिए! यह तो सेवायें हैं। आप जो हमें सेवायें देंगे वह हम करते हैं, करते रहेंगे बाकी दिल में निरन्तर तू ही तू, तेरे बिना कोई दिल में नहीं है। ऐसी अपनी पॉवरफुल स्थिति बनाओ। हमारे को बाबा ने ऐसे वरदान देकर रखा है, जो बाबा के वरदानों में ही सदा रात-दिन पलते, अपार खुशी आनन्द मौज में रहते हैं। हम हैं योगी लोग, तो हमें क्या चाहिए! कोई लोभ नहीं, कोई मोह नहीं... फिर यह देह-अभिमान किसलिए! जब देह भी तुम्हारी है तो उसका अभिमान कौनसा है। बाबा ने इतना अथाह मान शान दिया है जो इससे बड़ा और कोई मान शान हो नहीं सकता है। तो अपने ऊंचे शान में रहो और कोई मान शान में नहीं रहो इसलिए सबसे पहला चाहिए स्वयं के संकल्पों का मौन। यह अभ्यास करना है मन का मौन माना संकल्पों का मौन। बन जाओ विदेही। हर एक समझे कि हम महारथी से महारथी मायाजीत हैं। हारे हुए नहीं हैं, हम मायाजीत हैं। रावण को चरणों में रखो। रावण को हुक्म नहीं है कि आंख उठाकर हमें देख ले। ऐसा मन को मायाजीत बनाके जाओ।

अच्छा - ओम् शान्ति।